गाँधीजी के प्राणरक्षक
बतख मियाँ अन्सारी

लेखकः
सय्यद नशीर अहम्मद
अनुवादकः डॉ.जूटूर शरीफ

गाँधीजी के प्राणरक्षक
बतख मियाँ अन्सारी

लेखक :

सय्यद नशीर अहम्मद

अनुवादक :

डॉ.जूटूर शरीफ

आजाद हौव्स आंफ पब्लिकेशन

उंडवल्ली - 522501.

गाँधीजी के प्राणरक्षक : बतख मियाँ अन्सारी

(SAVIOUR OF GANDHIJI : BATAQ MIYA ANSARI)

AHP Series No. : 15

Written in Telugu by : **Syed Naseer Ahamed**

Translated into Hindi by : **Dr. Jutur Sharief**

Year of Publication : 2019

Published by : **Azad House of Publications**

Flat : C-2, Sree Rams Arcade,

Amaravathi Road

UNDAVALLI - 522501

Tadepally Mandalam,
Guntur Dist, Andhrapradesh.

Mobile : 9440241727

: naseerahamedsyed@gmail.com

naseerwriter2017@gmail.com

Typeset and Printed at : Jayadeepthi Graphics, Vinukonda

Price : Rs. 25-00

वह 1917 वाँ साल

महात्मा गाँधी 15 अप्रेल शाम तीन बजे के आसपास बीहार राज्य के मुजफरपूर से रेल मे चंपारन जिला केन्द्र मोतिहार रेलवे स्टेशन पहूँच गये। विविध गाँवों से आये हुए नीलबागान के किसानों ने उनका सादर स्वागत किया। सदी से लेकर नीलबागानों के लिए उस फसल से नीला रंग तैयार करनेवाले कारखानों के लिए चंपारन मशहूर था। अधिकांश नीलारंग कारखानों के, नीलबागों के मालिक अंग्रेज थे। भारतीय किसान तो लघु एवं मध्यम स्तर के किसान थे। अंग्रेज शासन में अंग्रेज मालिकों का बश चलता था। भारतीय किसानों में अधिकांश पट्टेदार एवं साझेदार थे। जमीन एवं कारखाने अपने अधीन में रहने के कारण नीलबागान और नीलारंग तैयारी से लाभान्वित होने के लिए गोरे मालिक चंपारन किसानें के हितों के खिलाफ आचरण करने लगे। खासकर तीन कतिया (Teen Kathia) समझौते को उनपर लादते हुए, तावान, जिराती, अबवाब जैसे विविध प्रकार के करों को जबरदस्ती के साथ वसूल करने लगे । बेगार, जमींदारी पद्धति के अनुसार किसानों के श्रम का शोषण कर, उन्हें बेगारी गुलामी का शिकार बनाने लगे।

गोरे मालिकों के अनैतिक आचरण का विरोध करने पर भी, साहस के साथ इनकार करने पर भी गोरे मालिकों के कारिंदों की कर्कशता का शिकार किसान परिवार को होना पडता था। बहिष्कार का शिकार होना पडता था। सरकार कार्यालयों में अंग्रेजों की बात चलने के कारण किसान निस्सहाय होते थे। गोरे मालिकों का आधिपत्य, अकृत्यों की कोई सीमा न रहने के कारण सहन खोये हुए किसान कभी कभी विरोध कर, आंदोलन करने पर भी अंग्रेज अंधिकारियों के सहारे आंदोलन को दमन करते थे। आंदोलन करने वाले किसान नेताओं को कष्ट झेलने का क्रम चलता था।

इन विकट परिस्थितियों से आक्रांत किसानों को सहारा देने के लिए चंपारन प्रांत के राजकुमार शुकला (1875-1919) पीर मुहम्मद मूनीस अन्सारी (1882-1949) के अनुरोध पर महात्मा गाँधी मोतिहार आगये । महात्मा गाँधी मोतिहार आने के दुसरे दिन से कार्याचरण आरंभ हुआ। बडी संख्या में चंपारन किसान उनके पास आकर नीलबागान, नीलारंग कारखानों के मालिकों के दुष्कृत्यों की कहानियाँ सुनाने लगे।

गोरे मालिकों की सोच में भी नही था कि - दुखित किसान निडर होकर गोरे मालिको के दुष्कृत्यों को जाहिर करेंगे। इन प्रतिकूल परिस्थितियों को देखते हुए गोरे मालिक महात्मा गाँधी के आंदोलन के कार्याचरण को रोकना चाहते थे। अंग्रेज सरकारी अधिकारियों को, अदलतों को, उकसाया गया। महात्मा गाँधी के शांतिपूर्वक सत्याग्रह आंदोलन को पुलीस और अदालत रोक नही पायीं। अंग्रेज अधिकारियों के दण्ड के भय का परवाह नही करते हुए गोरे मालिकों की क्रूरता का, बर्बरता का आर्थिक शोषण का खुलकर सबूतों के साथ किसान इजहार करने पर गोरे मालिकों मे खलबली मचगयी।

इस से डरकर महात्मा गाँधी को चंपारन से हटाने के लिए गोरे मालिकों ने निर्णय लिया। गोरे मालिकों में दुष्ट के रूप मे विख्यात इर्विन ने इस मामले मे दखल होकर साजिस की। उस साजिस के अनुसार महात्मा गाँधी को अपने घर दावत मे बुलाकर विषाहार से उनका अंत करना चाहता था। हमारे आँखो को अपने उंगलियों से ही ठोसवाकर अपना षडयंत्र पूरा करने की योजना बनायी गयी। अपने घर का बावर्ची बतखमियाँ अन्सारी (1867-1957) को योजना मे शामिल किया गाया। उन्हें बुलाकर अपने घर दावत में आनेवाले महात्मा गाँधी जी को दूध में जहर मिलाकर देने का हुक्म दिया गया इस आज्ञा को पालन करने में संकोचते हुए बतखमियाँ को भारी इनाम से मालामाल करने का, वेतन बढाने का, जमीन हस्तगत करने का प्रलेभन इर्विन ने किया। उन्होने आज्ञा के उल्लंघन के बुरे एवं भयानक परिणामों को भोगने की चेतावनी भी दी। अत्यंत क्रूर के रूप में विख्यात गोरे मालिक की दुष्टता एवं क्रोध से अवगत बतख मियाँ अन्सारी किसी प्रकार का जवाब दिये बिना खामोश रह गये।

इस षडयंत्र के अनुसार महात्मा और उनके सहचरों को अपने घर दावत में निमंत्रण दिया गया। उस गोरे के षडयंत्र से अनभिज्ञ महात्मा गाँधी अपने सहचर वकील बाबूराजेद्रं प्रसाद के साथ दावत में उपस्थित हुए। उस दावत के दैारान बतखमियाँ अन्सारी ने सीधे महात्मा के पास जाकर अपने मालिक इर्विन के षडयंत्र का रहस्योद्घाटन कर दूध में जहर मिलायी गयी बात को गाँधी जी को वाकिफ कराया। बतख मियाँ अन्सारी के दिलेरी के कारण इर्विन के जानलेवा साजिस से महात्मा बचगये।

महात्मा गाँधी को अंत करने का षडयंत्र विफल होने पर खासकर अपनी आज्ञा का उल्लंघन करनेवाला अपने घर का बावर्ची षडयंत्र को बहिर्गत करने से इर्विन आगबबूला हुआ। इसी घुस्से के कारण बतखमियाँ अन्सारी को भौतिक- हिंसा का शिकार होना पडा। उन्हें अपनी नौकरी से हाथधोना पडा। उनकी संपत्ति जप्त कर हडपली गयी। उनका घर नीलाम कर दिया गया। अंग्रेज पुलीस के व्दारा उन्हे गिरफतार कर लिया गया। आखिर यहाँ तक कि अन्सारी परिवार को अपना गाँव सिस्वाअजगरी (Siswa Ajgari) से निष्कासित किया

गया। अंग्रेजों के शोषण से किसानों को विमुक्त करने के लिए चंपारन आयेहुए महात्मा गाँधी को अंग्रेजों के प्राणांतक षडयंत्र का शिकार होने से बचाने की खुशी से बतखमियाँ अन्सारी कई कष्टों को झेलते हुए अपना गाँव छोडकर परिवार सहित कहीं चलेगये।

अंग्रेज राज का अंत करने के लिए आजादी आंदोलन में प्रमुख योगदान देने वाले मोहनदास करम चंद गाँधी अंग्रेजों के विषाहार के षडयंत्र से बतखमियाँ अन्सारी की निर्भयता, एवं साहस के कारण 1917 में महात्मा गाँधी प्राणों से बचगये। गोरे मालिकों के मृत्थुकुहर से गाँधी जी को बचाने वाले साहसी बतख मियाँ अन्सारी चंपारन जनबाहुल्य में मिलकर ओझल होगये।

* * *

1757 प्लासी युद्ध के उपरांत अंग्रेज अपना शेषण खुलकर करने लगे। उन दिनों वस्त्र के कारखानों में कलंकारी कारखानों में उपयोगी नीलारंग का उत्पादन एवं निर्यात बढाया गया। बंगाल परगणा में आरंभ किया गया नीलारंग का उत्पादन एवं निर्यात को क्रम से बीहार तक फैलाया गया। बीहार राज्य के चंपारन प्रांत में नीलबागान, नीलारंग उत्पादन पर जोर देकर गोरों ने अंग्रेज सरकार, अंग्रेज अधिकारियो के सहारे जमीन खेतों पर आधिपत्य जमालिया। अधिक लाभापेक्षा रखनेवाले गोरे जितना विस्तार में चाहते थे उतने में नीलबागान उगाने के लिए, उनके व्दारा निर्धारित दर पर फसल प्रदान करने के लिए किसानों पर प्रतिबंध लगाये गये। जमीन को बीस हिस्सों में बाँटकर उसमें से तीन भागों मे अनिवार्य रूप से नीलबागान उगाने के लिए बाध्य किया गया। 'तीन कतिया' समझौते को किसानों पर जबरन थोपागया । इस समझौते के अमल एवं उल्लंघनों पर निर्देश देते हुए, नियंत्रित करने के क्रम में 40 किस्म के टैकस एवं जुर्मानों का वसूलात आरंभ कर दिया गया।

अंतराष्ट्रीय विपणन परिणामों के मुताबिक, वातावरण भैगोलिक परिस्थितियों में आये हुए परिवर्तन के कारण आये हुए नुकसानों के पूर्ति के लिए विविध प्रकार के नये वसूलात करने लगे। इस आर्थिक मानसिक शोषण के प्रति किसान मैानांदोलन करने पर भी गोरे मालिकों को, अंग्रेज सरकार के अधिकारियों को पुलीसों की मदद रहने के कारण किसान कुछ भी नही कर सके। इस निस्सहायता का एवं मजबूरी का लाभ उठाते हुए गोरे मालिक, कर्मचारी अपने जी चाहे ढंग से व्यवहार करते हए किसनों के आर्थिक शक्ति का खुलकर शोषण करने लगे। गोरे मालिकों के अकृत्यों के प्रति सवाल करने, प्रतिरोध करने की व्यवित-व्यवस्था न रहने के कारण चंपारन किसान गोरों के सामने झुककर रहने के सिवाय और कोई चारा न रहने की मजबूरी की स्थिति में धकेल दिये गये।

मातृ भूमि पर आधि-पत्य को सवाल करते हुए आजादी आंदोलन हिन्दुस्तान के सर जमीन पर फैलना शुरू होने के बाद भारतीयों में जागरण उभरने पर अंग्रेजों के आधिपत्य का, दुष्कृतयों का शोषण का शिकार होते हुए चंपारन किसानों में चेतना जागृत हुई। गोरे मालिकों का विरोध करने का साहस धीरे धीरे बढगया। गोरो के अकृत्यों एवं आधिपत्य के

खिलाफ चंपारन किसान जहाँ- तहाँ सर तानकर चलने लगे। उस प्रतिरोध का अंगबल से, सत्ता बल से गोरे मालिक, अमानुषिक रूप से दमन का रास्ता अपनाने पर भी हम है न? हम है न? कहते हुए चंपारन धरती से आजादी आंदोलन स्फूर्ति पाकर, आंदोलन करने केलिए शक्ति संपन्न किसान नेता और किसान समर्थकों का उद्भव हुआ।

शेक गुलाब

इस क्रम में चंपारन धरती से जनित किसान नेताओं में से शेक गुलाब (1857-1920) एक थे। बीहार राज्य साती (Sathi) पुलीस ठाने की सीमा में चाँदबार्वा (Chand barwah) ग्राम निवासी उनके पिता शेक रकतू (Shaik Raktu) संपन्न भूस्वामि थे। शेक गुलाब बचपन में बडी पढाई हासिल न करने पर भी अच्छे प्रज्ञा संपन्न धैर्यशाली थे। अन्याय, अक्रमों के सख्त विरोधी थे। इस सहज स्वेश्चा, स्वतंत्र स्वभाव वाले, विदेशी शासक और उनके समर्थको के अकृत्य, आधिपत्य को सहन न कर पाने वाले परिवार से आने के कारण शेक गुलाब ने अंग्रेजों के खिलाफ समर शंख फूंक दिया।

चंपारन प्रांतों में नीलबागन, नीलारंग के कारखानों के गोरे मालिकों के शोषण एवं नृशंसता का सहन न कर पानेवाले शेक गुलाब (1905) में किसान आंदोलन के रास्ते पर आगये। पहले उन्होने अपने गाँव के शेक मुनव्वर से मिलकर गोरे मालिकों के खिलाफ जनता को संघटित करना शुरू किया। आरंभ में अडोस- पडोस गाँवों के जगनलाल हफीज, पीर मुहम्मद अन्सारी (1881-1961) बाबू शीतलराय, हर्बन सहास, हफीज मुहम्मद सानी, (1888-1951) जैसे योद्धा मिलकर आये। उसके बाद क्रांतिकारी स्वभाव वाले कलम के सिपाही पीर मुहम्मद मूनीस अन्सारी ने (1882-1949) शेक गुलाब के गुट से हाथ मिलाया। उस किसान नेता के गुट को मेधोपरक सहयोग प्रदान करने के लिए पीर मूनीस मिलकर आने से शेक गुलाब के नेतृत्व में गोरे विरोध आंदोलन ने एक नया मोड लेलिया । इस क्रम में शेक गुलाब बाबू शीतलराय, हफीज दीन मुहम्मद, राधेमल, पीर मुहम्मद मूनीस के आवास किसान समस्याओं पर चर्चाएँ और व्यूह रचना के लिए रहस्य केन्द्र बनगये।

गोरे मालिको के दुष्कृत्यों के खिलाफ आवाज उठाने वाले शेख गुलाब चंपारन प्रांत में किसानों से स्वयं मिलकर अंग्रेजों के दुष्कृत्यों पर धज्जियाँ उडाते हुए तीन कतिया का बहिष्कार करने के लिए, अमान्य टैकसों का, जुर्मानों का विरोध करने के लिए किसानों को संघटित किया गया। उस समय विविध गाँवों के चेतनशील किसान बाबूलाल मिश्रा, गणपति राय, गणेशराय, कन्हय राय आदि शेख गुलाब का समर्थन एवं सहयोग देते रहे। कई दिनों से अंग्रेजियों के दमननीति को सहन करते हुए किसान, शेख गुलाब की ईमानदारी एवं निर्भयता को देखकर उनके साथ चलनेलगे। धर्म, वर्ण वर्ग से परे होकर चंपारन किसान शेक गुलाब के प्रभावशाली आज्ञा सरीखे बातों का अनुसरण करते हुए एक जुट होगये।

शेक गुलाब (1857-1920)

1907 में शेक गुलाब क बुलाव क अनुसार साती (Sathi) किसानों ने चंपारन प्रांत में पहली बार तीन कतियां रिवाज का तिरस्कार करते हुए नीलबागान का बहिष्कार किया। इस के बदले में जुर्माना भरने के लिए जबरदस्ती करनेवाले गोरे मालिकों के कारिंदों का, गूंडों का संघटित होकर किसानों ने सामना किया। दशकों से सहम कर रहनेवाले किसान अपनी आज्ञओं को धिक्कारना, सामने डटकर खडेरहना जैसी घटनाओं को गोरे मालिक सहन नही कर पाये। किसानों के खेतों को जल सुविधा से वंचित कराया गया। इस अनुचित कार्य से कृद्ध किसान शेक गुलाब के नेतृत्व में असहमती जाहिर करते हुए जुलूस निकल चुके।
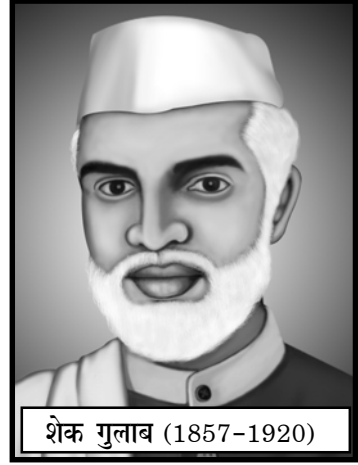
गोरे मालिको के विरोध में किसानों को एकत्रित करते हुए शेक गुलाब कोअब उपेक्षित न करने का फैसला अंग्रेजों के व्दारा लिया गाया। आर्थिक प्रयेजन, रोजगार की लालच दिखाकर शेक गुलाब और उनके अनुचरों को अपनी ओर खींचलेने की योजना रची गयी। शेक गुलाब और उनके अनुचरों को पुलीस विभाग में प्रत्येक पुलीस पद के लिए नौकरी भर्ती आदेश पत्र भेजे गये । अंग्रेजों के प्रलोभन के प्रति न झुरनेवाले शेक गुलाब उनके अनुचरों ने उन आदेश पत्रों को नकार दिया। अंग्रेजों की परवाह नही की गयी। सरकारी आदेशों की उपेक्षा करने के जुर्म पर किसानों को गिरफतार कर विविध इलजामों का आरोप लगाकर अभियोग पत्र दर्जकर दण्ड देने पर मार्च 1908 में इन सजाओं को उच्च न्यायालय ने रद्द कर दिया।

इस क्रम में शेक गुलाब ने पहलीबार बडी संख्या में किसानों के साथ आकर किसानों की व्यथाओं का, अंग्रेजों के दमनकांड का उल्लेख करते हुए न्यायाधीश को विनति पत्र समर्पित किया। इस कार्य से कृद्ध गोरे मालिक अधिकारिथें के सहारे किसानें पर और भी टूटपडे। इन परिस्थियों में समुचित न्याय की माँग करते हए शेख गुलाब ने चंपारन जिलाधीश को विनती पत्र समर्पित किया। जिलाधीश ने तुरंत आवश्यक जाँच का आदेश दिया। इन आदेशा के मुताबिक अंग्रेज जाँच अधिकारी ठीक तरह से जाँच न करने के कारण उच्च अधिकारियों को शेख गुलाब ने शिकायत पत्र भेजा। इस साहस कार्य को न सहते हुए अंग्रेज अधिकाकियों ने शेख गुलाब के कार्य और किसान आंदोलन को रोकने का निर्णय लिया । इस क्रम में गोरे मालिकों और साती प्रांत के गोरे मालिक एफ सी कोफिन ने (F.C. Coffin) शेख गुलाब उनके अनुचरों पर अक्रम क्रिमिनल केस दर्ज करवाया। इस कारण से 12 सितंबर 1907 को शेख गुलाब को और उनके अनुचरों को गिरफतार कर लिया गया।

इस केस में शेख गुलाब और 162 किसानों को सजा देकर जेल भेजा गया। इस के बाद उच्चतम न्यायालय ने उन सजाओं को रद्द कर दिया।

न हारा हुआ विक्रमार्क की तरह आगे अग्रसर होते हुए शेख गुलाब को देखकर उनके त्यागशील परंपरा से अवगत पडोसी गाँव के किसान भी गुलाब के नेतृत्व में बडी संख्या में एकत्रित हुए। अंग्रेजों के आधिपत्य का, आज्ञाओं का उल्लंघन करने लगे।प्रलोभन के प्रति न झुकने वाले शेख गुलाब को आर्थिक रुप से नुकसान पहुँचाने के लिए गोरे मालिक एफ सी कोफिन (F.C. Foffin) ने अनेक षडयंत्रों की रचना की। इन कारणों से शेख गुलाब का परिवार आर्थिक अभाव के साथ साथ भौतिक हमलों का शिकार भी हआ। जमीन, जायदाद भी लुप्त होगयी।

इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शेक गुलाब और उनके सहचर भेतिया (Bettiah) के राधेमल के घर में समालोचना कर किसान आंदोलन को मजबूत करने का फैसला लिया गया। 1908 में दशहरा त्यौहार के अवसर परआयोजित सभा में बडी संख्या में उपस्थित किसानों को संबोधन करते हुए शेक गुलाब, शीतलराय, राजकुमार शुक्ला ने नीलबागानों को बहिष्कार करने का निवेदन किया। इस आवाज के अनुसार किसानों ने नीलबागान उगाना छोड दिया। इस कार्य के विरोध में दुष्ट कार्य करने वाला परसु (Parasu) कारखाना के अंग्रेज प्रबन्धक उसके सहचर पर किसानों ने हमला किया। इस घटना से धैर्य पाकर इतर प्राँतों के किसानो ने अंग्रेजों के हमलों का सामना करना आरंभ कर दिया।

इन परिणामों से हताश गोरे मालिक और अधिकारियों ने किसान नेताओं पर कार्यवाई करने के लिए तत्पर हुए। किसान आंदोलन में सक्रिय भागलेने वाले किसानो को अक्रम रुप से गिरफतार करना आरंभ हुआ। किसानें के आंदोलन से गाँवों में अशांति फैलाने का, शांति-सुरक्षा भंग होने का बहाना बनाकर पुलीस-सिपाहियों के चौकियों का प्रबंध किया गया। चौकियों के प्रबन्ध के खर्चे भी गाँवों के किसानों से सख्ती से वसूल करने लगे। फिर भी किसान आंदोलन रुका नही। अंग्रेज सरकार व्दारा भेजी गयी पुलीस, सैनिक दल किसानों पर भैतिक हिंसा करने लगे। किसानों की जायदाद लूटने लगे।

अंग्रेजों की दमनात्मक कार्यवाई शेक गुलाब के क्रांतिकारी कार्यकलापों को रोक नही पायी। आखिर शेक गुलाब को गिरफतार करने का वारंट जारी हुआ। शेक गुलाब अंग्रेज पुलीस, गुप्तचरों के नजर में पडे बिना लुक छिपकर अपने कार्यक्रम करने लगे। अपने प्रिय किसान नेता शेक गुलाब को ग्रामीण किसान परिवार पेट में रखकर बचाते रहे। शेक गुलाब को पकडने में असमर्थ अंग्रेज सरकार ने उनको पकडकर सौंपने वालों को पाँच सौ रुपये का इनाम देने की घोषणा की। इस के साथ साथ कुर्की की गयी जमीन, पुलीस नौकरी भी उनको दीजायेगी। उनके पता बताने को लेकर जनता पर, किसानों पर दबाव डाला गया।

पुलीस के व्दारा हिंसाकांड होता रहा। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में शेक गुलाब ने बैलगाडी में लुक-छिपकर जेतिया कचहरी पहँचकर अधिकारी के सामने आत्म समर्पित हुए।

शेक गुलाब के अनुचरों पर अनेक इलजाम लगाकर अभियोग पत्र दर्ज कर उनको पुलिस ने हिरासत मे लेली। बडी संख्या में किसानों को गिरफतार किया गया। गिरफतार किसानें की संख्या ज्यादा होने के कारण अंग्रेज सरकार व्दारा जाँच कार्य के लिए विशेष इंतजामात किये गये। आखिर किसान, किसान नेता लगभग दो सैा लोग दण्ड के पात्र हुए। शेक गुलाब को अदालत ने दो साल की सजा सुनाई और हजार रुपयें का जुर्माना भी हुआ।

इन परिणामों के परिप्रेक्ष्या में चंपारन के जेतिया, साती आदि प्रांतों के किसान समस्याओं पर जाँचपडताल करने के लिए अंग्रेज सरकार ने डब्लयू आर गौर्ले (W.R.Gourlay) समिती का गठन किया। 7 अप्रेल 1909 में गौर्ले ने अपना प्रतिवेदन सरकार को समर्पित किया। इस प्रतिवेदन समर्पण के उपरांत सजा भोगने वाले कुछ किसानों को कुछ शर्तों के आधार पर रिहा किया गया। लेकिन किसान नेता शेक गुलाब तो पूरी सजा की अवधी के बाद ही जेल से रिहा हुए। जेल में उनके प्रति पुलीस अमानुषिक व्यवहार करने से बीमारी का शिकार हुए उन की आँखों की नजर मंद पडनेलगी।

जेल से विमोचित शेक गुलाब ने तबीयत के सहयोग के अनुरुप किसान आँदोलन आरंभ किया। इस, क्रम में महात्मा गाँधी को चंपारन लेआने के लिए शेक गुलाब, राजकुमार शुकला, पीर मुहम्मद मूनिस आदि ने विचार-विमर्श किया। इस सोच के अनुसार 1917 में महात्मा गाँधी को चंपारन लेआने में शेक गुलाब ने प्रमुख भूमिका निभाई। चंपारन आने की सहमति देते हुए गाँधी जी ने अपनी यात्रा विवरण की तालिका भेज दिया। इस समाचर के अनुसार महात्मा गाँधी चंपारन दौरे के बारे में शेक- गुलाब और उनके सहचर प्रचार करने के कारण 15 अप्रेल 1917 महात्मा मोतिहार पहुँचते ही भारी संख्या मे किसानें ने रेलवे स्टेशन पहुँचकर उनका सादर स्वागत किया।

शेक गुलाब और उनके अनुचर नीलबागान कारखानों के मालिकों के दुश्चर्यों के खिलाफ किसानों को संघटित करते हुए किसानों को जागृत करने से धीरज धारण कर महात्मा गाँधी के व्दारा आयोजित पूछ-ताछ में अधिक संख्या में किसानों ने भागलेकर विवरण एवं शिकायत पत्र समर्पित किया। महात्मा गाँधी जितने दिन चंपारन मे थे उतने दिन गाँधी जी के साथ शेक गुलाब थे उन्होने केवल किसान समस्याओं से जुडे कार्यक्रमों में ही नही अपितु हिन्दु- मुसलमान एकता से जुडे सामाजिक कार्यक्रमों मेंभी भाग लिया। चंपारन किसान समस्याओं को सुलझाने के लिए अंग्रेजों की दमननीति को बहिर्गत करते हुए महात्मा गाँधी के नेतृत्व मे आयोजित चंपारन सत्याग्रह नीलबागान. कारखानों के गोरे मालिकों के दुश्चर्थों को कानूनन चरमगीत गाने के उपरांत किसान आंदोलन के नेता शेक गुलाब 1920 में स्वर्ग सिधारे।

पीर मुहम्मद मूनीस

1905 में चंपारन किसान आंदोलन शेक गुलाब आरंभ करने के बाद उस आंदोलन में नया जोश भरने में पत्रकार, योद्धा पीर मुहम्मद मूनीस का योगदान काफी महत्वपूर्ण था। पीर मुहम्मद मूनीस (1882-1949) का जन्म बेतिया गाँव में 1882 में हुआ। उनके पिता का नाम फतिंगन मियान (Fathingan Miyan) थे। अंग्रेज सरकार के प्रति नीलबागान एवं नीलारंग कारखानों के मालिकों के शोषण एवं आधिपत्य का विरोध आरंभ से ही पीर मुहम्मद मूनीस ने किया है। इन विरोधी भावनाओं के व्यक्तीकरण के लिए उन्होने अपने कलम को अस्त्र के रूप में चुन लिया। अन्होने गुरू प्रशिक्षण पाठशाला (Guru Training School) में अध्यापक के रूप में काम करते हुए साप्ताहिक पत्रिकाओं को लेख. निबन्ध लिखना आरंभ कर दिया। इस क्रम में सहायता करनेवाला, सहचर, काम्रेड, जैसा भावार्थ देनेवाला मूनीस नामक कलम के नाम को अपने नाम से जोडकर पीर मुहम्मद मूनीस के रुप मे मशहूर हुए।

प्रमुख क्रांतिकारी विख्यात पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी (1890-1937) के व्दारा कानपूर केन्द्र से 1913 में उद्राघाटित प्रताप साप्ताहिक में पीर मुहम्मद मूनीस ने चंपारन प्रांत के पत्रकार के रूप मे जिम्मेदारी लेली। यह पत्रिका बाद में दैनिक समाचार पत्र का रूप लिया। उन्होने चंपारन लोगों के खासकर किसान समस्याओं के बारे में अंग्रेज अधिकारीगण, नीलबागान कारखानों के मालिकों के व्दारा कियेजाने वले अकृत्यों शोषण लूटी आदि पर समय समय पर धज्जयाँ उडाते हुए लेख, समाचारों को प्रकाशित किया। पीर मुनिस मात्र प्रताप पत्रिका में ही नही बल्कि इतर हिन्दी पत्रिकाओं में भी चंपारन किसान समस्याओं पर जनता के कष्टो को प्रस्तुत करते हुए खासकर उन्होने किसानों के समस्याओं को संसार के समक्ष रखने का प्रयास किया।

इस कारण से पीर मूनीस एक ओर नील बागान. एवं नीलारंग कारखानों के मालिक, दुसरी ओर अंग्रेज अधिकारियो के घुस्से का शिकार हुए। अंग्रेज सरकार के अभिलेखों में उनको ''बदमाश पत्रकार, खतरनाक, बदनामी व्यक्ति गुण्डावादि पत्रकार, कटुवादी, कहकर उनके प्रति नफपत का जहर उगाल दिया गया। मूनीस के सृजन को संदेहात्मक साहित्य के रुप में घोषणा की गयी। अंग्रेज, अंग्रेज सरकार के अभिलेख जो भी कहे वे तो मात्र निरंतर क्रांतिकारी गणेश विद्यार्थी के मार्गदर्शन में किसान आंदोलन कार्यक्रमों की योजना बनाते हुए निर्भय होकर चंपारन किसानों के साथ ठहरे। उन्होने अंग्रेजों के शोषण, अंग्रेज सरकार की दुर्नीतियों को, चंपारन किसान समस्याओं को लेख, समाचारों के व्दारा प्रांतीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक ज्ञात करवाया।

पीर मुहम्मद मूनीस (1882–1949)

1905 में शेक गुलाव के व्दारा आरंभ किया गया किसान प्रतिघटन ओंदोलन के लिए आरंभ से ही पीर मूनीस ने सयर्थन की घोषणा मात्र न कर उनके आंदोलन कार्यक्रमों का मार्गदर्शन भी किया है। उनका आवास किसान नेताओं के विचार-विमर्श के लिए रहस्य केन्द्र रहा। चंपारन किसान आंदालन के बारे में. बताते हुए नील विभ्रात आंदोलन (Neel vibhrat andolan) के नाम पर नील प्रतिरोधक आंदोलन (Indigo Resistance Movement) शीर्षक पर हिन्दी केसरी पत्रिका में उनके व्दारा लिखेगये लेख से अंग्रेज अधिकारियों की नींद हराम होगयी। किसानों के इस प्रतिरोध आंदोलन के सुर्खियों को समय ममय पर स्पष्ट रुप से उल्लेख करते हुए प्रताप पत्रिका के अलवा इतर पत्रिकाओं में पीर मुहम्मद मूनीस के व्दारा लिखे गये लेख प्रकाशित हुए। आंदोलन समाचार न केवल अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नेताओं की दृष्टि को ही नही, बल्कि अंग्रेज सरकार की दृष्टि को भी आकर्षित करने लगे। नील प्रतिरोध आंदोलन के नेता शेक गुलाब और उनके अनुचरों पर अंग्रेज सरकार टूटपडने के बाद आंदोलन की तीव्रता घटने पर भी चंपारन किसान की ओर से आंदोलन में भागलेना पीर मुनीस ने नही छोड दिया। प्रताप पत्रिका में प्रार्थना (06-09-1915) चंपारन में अत्याचार (17-02-1916) चंपारन में अंधेरां (13-3-1916) बीहार सरकार का एक अनुचित कार्य (03-04-1916) जैसे लेखों द्वारा किसानों के कष्टों को व्यकत किया गया।

आखिर शेक गुलाब के सूचना के अनुसार चंपारन किसानों की दुस्थिति को महात्मा गाँधी की दृष्टि को लेआने को लेकर पीर मूनीस, राजीवकुमार शुकला ने विचार किया। इस निर्णय के अनुसार ‘‘ आप अपने अनुचर सत्याग्रही भाई बहिनों पर आफ्रिका में किये गये अत्याचारें से भी हमारी वेदना भरी गाथाएँ किसी भी रूप में कम नही है’’कहते हुए अपने कष्टों को बताते हुए फरवरी 1917 मार्च तक पीर मूनीस ने गाँधी जी को तीन पत्र लिखें। 1916 लकनऊ नगर में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस अधिवेशन में उपस्थित होकर राजकुमार शुकला, पीर मूनीस गाँधी जी से मिले। राजकुमार शुक्ला अनपढ किसान (आत्मकथा - महात्मा गाँधी पृष्ट 354) होने के कारण पीर मूनीस के व्दारा लिखित निवेदन पत्र को शुक्ला ने गाँधी को देदिया। उनकी रचनाओं से बहुत प्रभावित गाँधी जी ने मोतिहार पहुँचकर 23 अप्रेल को स्वयं पीर मूनीस के घर जाकर उनकी माता को परामर्शित किया। यह विषय प्रताप पत्रिका (3-4-1917) संचिका में प्रकाशित हुआ।

इन प्रयासों के फलस्वरूप महात्मा चंपारन आने के लिए सहमत हुए। गाँधी जी के चंपारन आने के विषय को भी मूनीस ने अपने सहचरों व्दारा प्रचार करवाया। प्रताप पत्रिका मे प्रार्थना शीर्षक से महात्मा के चंपारन दौरें का प्रचार किया गया। इस शीर्षक से प्रकाशित करपत्रों को एक साधू बाँटते हुए पकडे जाना अंग्रेज अधिकारियों के लिए हैरान की बात थी। महात्मा के चंपारन आने से लेकर चंपारन छोड जाने तक पीर मूनीस उनके साथ रहे। चंपारन में महात्मा को पूर्ण रूप से सहयोग देनेवाले व्यक्तियो की सूची अंग्रेज अधिकारी व्दारा बनायी गयी। उस सूची में पीर मूनीस का नाम प्रमुख था।

चंपारन में सत्याग्रह आंदोलन को महात्मा गाँधी चलाने के दौर मे पीर मूनीस ने अंग्रेजों के धमकियों से न डरकर आंदोलन के सुर्खियों को प्रताप पत्रिका के व्दारा जग जाहिर करवाया। उन्होने चंपारन की दुर्दशा (16-4-1917) चंपारन में कर्मवीर गाँधी जी का आगमन (30-4-1917) चंपारन में महात्मा गाँधी (7,8,9 मई 1917) चंपारन में तीन कतिया प्रथा (21 मई 4,11,18 जून 1917) जैसे लेख लिखे। चंपारन का उद्धार नामक पुस्तक भी प्रताप पत्रिक व्दारा प्रकाश में लायी गयी। इन कारणो से अंग्रेज उनपर आग बबूला हो उठे। गोरे मालिकों ने उन्हे नौकरी से वंचित करवाया। उनकी संपत्ति जब्त करवाई गयी । आखिर उनपर विविध अपराध आरोपण से अक्रम केस दर्ज किसे गये। उनको छेः महीने जेल की सजा भी हुई। अपील करने पर सजा में तीन महीने कम किया गया। जेल अनुभवों की दुस्थिति के बारें में उन्होने 30 सितंबर 1918 प्रताप पत्रिका ''सन सनी फैलानेवाला मुकद्‌दमा'' शीर्षक से संपादकीय प्रकाशित करवाया।

भारत स्वतंत्र आंदोलन को सत्याग्रह आंदोलन के रूप मे चलाया गया। महात्मा गाँधी ने चंपारन सत्याग्रह आंदोलन स्वरूप- स्वभावों के बारे में निर्देश दिया। गाँधी के चंपारन आने में जिन व्यक्तियों का योगदान था उसका विवरण अंग्रेज सरकार पुलीस अभिलेखों के उल्लेखों में (Pir Muhammad is actually a dangerous and Hoodlum Journalist who through his questionable literature, brought in light of sufferings of a backward palce like champaran in Bihar, And influnced Mr. Gandhi to visit Champaran) '' पीर मुहम्मद वास्तव में खतरनाक क्रांतिकारी पत्रकार थे। जिन्होने अपनी प्रतिघटनात्मक साहित्य के व्दारा चंपारन की पिछडे पन की व्यथाओं को प्रकाश में लाया। गाँधी चंपारन आने में उनका प्रभाव था'' कहकर उल्लेख किया गया। चंपारन से गाँधी के निष्क्रमण के बाद भी अविराम योद्धा के रूप मे पीडितों का पक्ष लेकर आंदोलन करते रहे। उन्होने प्रताप पत्रिका मे चंपारन मे फिर अत्याचार (4-8-1918) चंपारन मे फिर नादिरशाही (30-8-1920) जैसे लेख प्रकाशित करवाकर गोरे मालिकों को की, अधिकारियों की, नींद

हराम कर दी। प्रताप, बालक, जनशक्ति जैसी पत्रिकाओं में दुखीआत्मा,एक दुखीआत्मा,दुखित हृदय, सहानुभूति हृदय जैसे शीर्षकों से लेख लिखकर उन्होने किसानों की दुर्दशा के प्रति भारत राष्ट्रीय कांग्रेस नेताओं की दष्टि आकृष्ट की।

पीडित किसान पक्षधर पीर मूनीस ने किसानों को संघटित करते हुए 1918 मे स्वयं किसान सभा का आयोजन किया। उस किसान सभा की ओर से चंपारन ईख किसानों की ओर से किसान समस्या को सुलझाने के लिए उन्होने संघर्ष किया। निलबागान का स्थान ईख फसल लेने के बारे में अंग्रेजों के आधिपत्य के विरोधी मूनीस ईख किसान आंदोलन का मार्गदर्शन भी उन्होने किया। चंपारन के इतिहास के संबन्ध में भारत स्वतंत्रता आंदोलन के बारे में हिन्दु- मुसलमान एकता का, प्रबोध करते हुए हिन्दी, उर्दू भाषा विकास की कामना करते हुए उनके व्दारा रची गयी पुस्तके प्रकाशित नही होपाई। उन्होने चंपारन का इतिहास भी लिखा है। उनकी अमुद्रित रचनाएँ, लेख इतर मुख्य अभिलेख 1934 के भूकंप में घ्वंस होगये।

पीर मूनीस ने केवल किसान पक्ष ही नही लिये बल्कि मानव अधिकारो की रक्षा के लिए भी परिश्रम किया। हरिजन, पाकी, सफाई कर्मचारियों को संघटित करते हुए उनके न्यायपरक अधिकारों के लिए उन्होने संघर्ष किया। उन्होने बीहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन व्यवस्थापक सदस्या के रूप में हिन्दुस्तानी विकास के लिए, प्रचार के लिए विशेष प्रयास किया। मातृ भूमि के विमोचन के लिए हिन्दु- मुसलमान एकता को आवश्यक मानकर इस दिशा में उन्होने बहुत प्रयास किया। भारत देश में सामाजिक जन-समुदायो में भिन्नता मे एकता, एकता में भिन्नता अनिवार्य मानकर उन्होने उद्‌बोधन किया।

अंग्रेजों की दमन नीति को न सहन करने वाले पीर मूनीस ने स्वंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागलिया। 1921 मे अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस चंपारन जिला शाखा की स्थापना में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। वे चंपारन जिलापरिषद लोक प्रतिनिधि के रूप में चुने गये। बेतिया लोक प्रांतीय बोर्ड अध्यक्ष के रूप में कर्तव्य निर्वहण करते हुए 1937 में गाँधी जी के बुलावे के अनुसार व्यक्तिगत सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए उन्होने अध्यक्ष पद को त्याग पत्र दिया। नमक सत्याग्रह मे भागलेने पर उन्हे अंग्रेज सरकार तीन महीने पटना क्यांप जेलखाने मे कैद किया गया । अंग्रेज सरकार नीलबागान और नीलारंग कारखानों के मालिक अंग्रेज अधिकारी चाल चलाने पर भी, दमन का रास्ता अपनाने पर भी कुछ भी विचलित न होकर एक ओर मातृ भूमि के विमोचन के आंदोलन में, दुसरीओर लोगों का खासकर पीडित किसान समाज कल्याण के लिए संधर्षशील रहे। कलम के योद्धा पीर मुहम्मद मूनीस का निधन 24 दिसंबर 1947 में हुआ।

चंपारन में 'कर्मवीर'

चंपारन लोगों के व्दारा 'कर्मवीर' खिताब पाकर महात्मा गाँधी पहले पट्ना पहुँच गये। उन्हें राजकुमार शुकला पट्ना के वकील बाबू राजेंद्रप्रसाद के घर लेगये। उस समय राजेंद्रप्रसाद पट्ना में नही थे। उनके घर के नौकर दकियानूसी प्रतिबंध के कारण गाँधी को बरामदे के सिवा घर में प्रवेश नही मिल। उस घर में पाखाना भी इस्तेमाल करने की अनुमति नही दी गयी। बाहर स्थित कुएँ से पानी निकालना भी मना कर दिया गया। इन विषयों को महात्मा ने अपनी आत्मकथा में उल्लेख ही नही बल्कि बेटे मगनलाल व्दारा गाँधी को लिखे हुए पत्र में 'आप को याचक के रूप मे देखा गया' - कहते हुए उल्लेख किया। उस समय लंदन में सहवासी मौलाना मजहरूल हक (1866-1930) पट्ना वासी की याद आकर सामना कर रहे संकट का उल्लेख करते हुए उन्हें सूचना दीगयी। यह समाचार पाकर मौलाना हक ने शीध्र ही महात्मा के पास आकर गाँधी को मुजफरपूर जाने का इंतजाम किया।

महात्मा गाँधी पट्ना से राजकुमार शुकला से मिलकर मुजफरपूर होकर वहा से चंपारन पहुँच गये। 'आत्मकथा' में ''चंपारन का धब्बा'' (The stain of Indigo) शीर्षक के साथ विविध शीर्षकों से चंपारन सत्याग्रह आंदोलन से संबन्धित विवरण गाँधी जी ने उल्लेख किया। उन्हे मोतिहार में किसानों ने बडी संख्या में आकर स्वागत किया। उन्होने मोतिहार पहुँचते ही अपना पूछ-ताछ कार्यक्रम शुरू किया। उनके आगमन से पहले ही शेक गुलाब के नेतृत्व में चंपारन किसान संघटित होने के कारण पीर मुहम्मद मूनीस जौसे पत्रकार महात्मा के आगमन के बारे में प्रचार करने के कारण किसान बिना संकोच के अपने कष्ट-नष्टों के बारे में गोरे मालिकों की क्रूरता के बारे मे बताने के लिए किसान समूह महात्मा गाँधी के पास आने लगे।

इन स्थितियों का विवरण देते दूए ''हमारा काम खूब बढगया. किसान समूहों में आकर अपने परेशानियाँ लिखवाने लगे। लिखलेनेवालों के पास लोग बढगये। पूरा घर भरगया।'' कहकर गाँधी जी ने अपनी आत्म कथा में उल्लेख किया। महात्मा के साथ बाबू राजेंद्रप्रसाद, मौलाना मजहरूल हक, वज्रकिशोर बाबू जैसे प्रमुख वकील रहने से चंपारन किसानों में उत्साह बढगया।गोरे मालिकों की परवाह किये बिना अंग्रेजों के अकृत्यों के बारे में किसान बताने लगे। इस प्रतिकूल परिस्थितियों से वाकिफ अंग्रेज सरकार, अधिकारी, गोरे मालिक कानूनन गाँधी जी को नियंत्रित करना चाहते हुएभी विफल होगये। नियंत्रण कार्य के दौरान अगर महात्मा गिरफतार होने पर उनकी जगह मौलाना मजहरूल हक, बाबूराजेंद्रप्रसाद, जिम्मेदारी लेने का निर्णय हुआ था। महात्मा के साथ चलरहे अगणित किसान, वकील समूहों को देखकर अंग्रेज सरकार हताश होगयी।

इस घटना से गोरे मालिकों में कोप बढगया। इस बात को बततेहुए - ''मुझे ज्ञात है चंपारन मे स्थित गोरे- मालिक बडे घुस्से में थे। अधिकारी भी असंतोष में थे। उन्हें घुस्सा आने पर मुझे कुछ नही करपाते लेकिन बेचारे गरीब किसानों को कष्ट देते हैं। इस लिए मैं समझ गाया कि मेरा पूछताछ कार्यक्रम सुचारू रूप से नही चलेगा, अंग्रेजों ने विष प्रचार आरंभ किया है।. उन्होने मेरे और मेरे अनुचारों के खिलाफ झूठे विज्ञापन पत्रिकाओं में घोषित करना आरंभ किया है.'' (आत्म कथा महात्मा गाँधी पृष्ठ सव्या 362) - कहकर महात्मा ने आत्मकथा मे उल्लेख किया है। नीला रंग कारखाना प्रबन्धक बेट्टियराज- ''गाँधी जी ईमानदार होसकते हैं लेकिन दक्षिणफिका में प्राप्त सपलताओं से वे अपने आप को बहुत कल्पना कर लेरहे हैं। गाँधी जी को आसान से अमरवीर बनासकते हैं। लेकिन दबोचना मुमकीन नही।'' कथन से जाहिर होता है कि अंग्रेजों का घुस्सा कितना है समझ सकते हैं। इस प्रेरणा से गोरे मालिक इर्विन ने क्षेत्र में प्रवेश किया। इर्विन ने महात्मा गाँधी पर हत्या यत्न किया। गोरा मालिक इर्विन से गाँधी के व्दारा चलाये गये उत्तर -प्रत्युत्तरों में कटु आलोचना आरोप-प्रत्यारोपण शामिल हैं। चंपारन बाल- बालिकाओं में शिक्षा विकास के लिए गाँधी ने पाठशालाओं कोआरंभ किया। रातके समय बाँस-घाँस से बनी पाठशालाओं को आग लगा दी गयी। इन प्रतीकार चर्याओं के परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी को अंतकरनें के लिए इर्विन व्दारा रचागया विषाहार षडयंत्र को बतख मियाँ अन्सारी तोडने से जातिपिता प्राणों से बचगये। इस से चंपारन सत्याग्रह आंदोलन में सफल हुए।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में संचालित चंपारन सत्याग्रह आंदोलन आखिर सफल हुआ। 5 जून 1917 रांची में बिहार- ओडिसा गवर्नर सर एड वर्ड गेइट (Sir Edward Gait) गाँधी जी से हुई चर्चाओं के फलस्वरूप सर फ्रांक स्ले (Sir Fank Sly) के नेतृत्व में अंग्रेज सरकार के व्दारा जाँच समिति गठनकी गयी। उस समिति में महात्मा भी एक सदस्य थे। चंपारन किसानों से संचित आठ हजार से बढकर सबूत सहित फरियादों को गाँधी जी ने समर्पित किया। इस जाँच समिती ने किसान के व्दारा किये गये इलजाम सभी सही ठहराते हुए 29 नवंबर 1917 प्रतिवेदन समर्पित किया। गोरों के व्दारा लिये गये रकम में से कुछ हिस्सा किसानों को अदाकरने का, तीन कतिया रिवाज कों रद्द करने का सुझाव समिति ने किया है। (आत्म कथाः महात्मा गाँधी पृष्ठ 369) ये शिफारिशे घोषित होने के बाद महात्मा गाँधी ने चंपारन से विदा ली।

इन सिफारिशों को भी रोकने के लिए गोरे मालिक और अधिकारियों के व्दारा किये गये प्रयास विफल हुए) आखिर चंपारन खेती -भूमि अधिनियम 1918 आगया। इस कानून से सौ वर्षो से लागू होरहा तीन कतिया रिवाज रद्द हो गया। गोरे शासकों का राज भी अंत हुआ। (आत्म कथा, महात्मा गाँधी पृष्ठ 369) उस दिन बतख मियाँ अन्सारी के

धैर्य-साहस के कारण महात्मा गाँधी अंग्रेजों के साजिस से प्राणों से बचकर मातृभूमि के विमोचन के लिए किये आंदोलन में भागलेकर स्वतंत्र्य समर योद्धाओं में अग्रगामी साबित हुए।

* * *

वह 1950 वाँ साल

वह बीहार राज्य के पूर्व चंपारन प्रांत में मोतिहार जिला केन्द्र में मोतिहार रेल्वे स्टेशन था। भारत के प्रथम राष्ट्रपति बीहार के लाडले डॉ. बाबू राजेन्द्र प्रसाद आगमन के उपलक्ष्य में आयोजित सभाकार्यक्रम चलरहा था। डॉ राजेन्द्र बाबू भाषण देरहे थे। उस समय सभा में एक कोने मे हल चल सुनाई पडा। एक वयोवृद्ध डॅा. बाबू राजानद्र प्रसाद से मिलना चाहता था। वह रोक रहे पुलीसों से विनती कर रहा था। उस ओर भारत राष्ट्रपति की दृष्टि गयी। अचरज की बात। वे तो 1917 में महात्मा गाँधी को विषाहार से प्राणों को बचाने वाले बतखमियाँ अन्सारी थे। सही वे तो बतखमियाँ अन्सारी ही है। हॅा. राजेन्द्रप्रसाद ने स्वयं बतख मियाँ अन्सारी को सभा मंच पर स्वागत किया। उन्हें प्यार से आलिंगन करलिया। उन्होने अपने बगल के आसन पर बतख मियाँ अन्सारी को सादर बिठवा लिया। इस अकल्पनीय दृश्य को देखते हुए प्रेक्षक चकित रह गये। वे कौन है? वे कौन है? जैसे प्रश्न पेक्षकों के मष्तष्कों मे उठ रहे थे।

प्रक्षकों के उत्सुकता के समाधान के रुप में भारत के प्रथम राष्ट्रपति हॅा. बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने 1917 में बीति छटनाओं को याद किया। उन घटनाओं में महात्मा गाँधी पर किये गये हत्या यत्न को ना काम करने में बतख मियाँ अन्सारी के व्दारा प्रदर्शित धैर्य-साहस की घटना याद आयी । ये कौन है? चकित होरहे है कया? कहते हुए लोगों से प्रश्न करते हुए उन दिनों की घटना को उन्होन पूरी तरह उल्लेख किया। अंग्रेज इर्विन ने महात्मा के प्राणहरण की साजिास की। उस साजिस को तोडकर गाँधी जी के प्राण बचाने वाले महाशय ये ही है कहते सभा को साक्षी बनाकर उन्होने खुलासा किया। महात्मा गाँधी पर किया गया हत्या यत्न उस हत्या यत्न को ना काम करने वाले बतख मियाँ अन्सारी की दिलेरी दास्तान तब तक जग जाहिर नही हुई थी।

उस दिन गोरे मालिक इर्विन की आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण बतख मियाँ अन्सारी और उनका परिवार किस रुप में दारूण परिस्थितियों के शिकार हुए है इस व्यथा कथा को बतख मियाँ अन्सारी ने बाबू राजेन्द्र प्रसाद को अवगत कराया । बाल - बच्चों के साथ गाँव से भगाये गाये। बतख मियाँ अन्सारी अंगेजों के दुष्कृत्यों का शिकार हुए परिस्थितियों को सुनकर राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद विचलित हुए। बतख मियाँ अन्सारी उनके तीन बेटे शेर मुहम्मद अन्सारी, मुहम्मत रसीद अन्सारी, मुहम्मद जमाल अन्सारी परिवार की

जीविका के लिए 36 बीघा (50/25/24/एकड बीघा के रूप में अलग अलग उल्लिखित है) खेती योग्य जमीन को सैंपने के लिए राष्ट्रपति ने जिलाधीश को स्वयं आदेश दिया।

1950 उस समय के राष्ट्रपति डॉ. बाबूराजेन्द्र प्रसाद बतख मियाँ अन्सारी के अकल्पनीय भेंट के बारे में विविध कथन है। 1950 में 10 साल के उम्र वाला गिरीश मिश्रा ने अपने मित्रों के साथ उस दिन के सभा में प्रेक्षक के रूप में भाग लिया। उन्होने 2010 में मेइन स्ट्रीम (Main Stream) साप्ताहिक में लिखे गये लेख में उस दिन के घटना क्रम को सविवरण प्रस्तुत किया है। उस दिन राष्ट्रपति ने स्वयं इर्विन के षडयंत्र को ना काम करते हुए महात्मा गाँधी के प्राणो को बचाने वाले बतख मियाँ अनसारी के साहसपूर्ण घटना के बारे में प्रस्तुत करने की बात को लेकर उल्लेख किया गया है। बतख मियाँ अनसारी के परिवार की दुस्थिति से अवगत राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद 50 एकड खेतीयोग्य जमीन उनके परिवार को सैंपने के लिए जिलाधीश को आदेश जारी करने का विषय आचार्य गिरीश मिश्रा (अर्थ शास्त्र अध्यापक किशोरिमिल कालेज दिल्ली) ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है।

इन विभिन्न कथनें के संबन्ध में चंपारन किसान आंदोलन पर विस्तृत रूप से शोध करनेवाले डॅ. मुहम्मद सज्जाद. (आचार्य, अलिघर मुस्लीम विश्रव विद्यालय अलिघर) एजाज अशरफ (पत्रकार, लेखक, नईदिल्ली) अफ्रोज आलम साहिल, (लेखक एवं पत्रकार नई दिल्ली) संदीप भास्कार (पत्रकार) संचारी पाल (पत्रकार) अरविंद दास, (पत्रकार मीडिया विजिल) आदि बतख मियाँ अन्सारी के साहस को राष्ट्रपति सभामंच की ओर से घोषित किये गये विषय की पुष्टीकरण समुचित सबूतों के साथ मौखिक समाचारके सहयोग से हुआ । इन कथनों में विविध व्यकित, राष्ट्रपति मोतिहार क्यों गयें? किस रेल्वे स्टेशन के पास उन्होने सभा को संबोधित किया है। क्या राष्ट्रपति ने पहले बतख मियाँ अन्सारी को देखा है? बतख मियाँ अन्सारी क्या राष्ट्रपति को देखने के लिए सामने घुसकर आये? क्या बतख मियाँ को राष्ट्रपति ने 24-25-50 एकड या 36 बीघा जमीन ,संक्रमित करने के आदेश दिया है? इन अंशों पर भिन्न भिन्न राय व्यवत करने पर भी इर्विन के विषाहार की साजिस से महात्मा गाँधी के प्राणों को बतक मियाँ अन्सारी के बचाने के विषय में तो एक ही मत व्यकत हुआ।

राष्ट्रपति स्वयं सभा मंच से बतख मियाँ अन्सारी परिवार को कृषियोग्य जमीन संक्रमित करने के लिए जिला अधिकारियों को आदेश प्रस्तुत करने पर तब तक तीव्र अभावग्रस्त जीवन व्यापन करनेवाले परिवार को अच्छे दिन आने की उम्मीद रखते हुए अन्सारी खुश हुए। यह खुशी बहुत दिन तक टिक नही पायी। प्रथम राष्ट्रपति आदेशो के लागू के लिए सात सालों से निरंतर सरकारी कार्यालयों के इर्द-गिर्द प्रदक्षिणा करने पर भी फायदा नही हुआ। आखिर बतख मियाँ अन्सारी 1957 में अल्लाह के प्यारे होगये।

3 दिसंबर 1957 राष्ट्रपति केअतिरिक्त निजी सचीव विदूयानाथ वर्मा राष्ट्रपति आदेशो को प्रमाणित करते हुए पत्र भी आया। उसके उपरांत 3 दिसंबर 1958 बतख मियाँ अन्सारी की संतान को राष्ट्रपति राजेंन्द्र प्रसाद ने दिल्ली आने का निमंत्रण दिया। अन्सारी के त्याग का स्मरण करते हुऐ उनके परिवार के साथ मिलकर छाया चित्रों को खिंचवाया गया । (हिन्दुस्तानी मुसलमानों का जंग -ए- आजादी में हिस्साः सय्यद इब्रहीम फिक्री, नई दिल्ली पृ.सं.23) इन छाया चित्रों को बहुत दिनों तक अन्सारी के बेटे लोगो को एवं अधिकारियों को दिखाते रहे।

राष्ट्रपति के आदेशो के लागू को आचरण में ले आने के लिए माँग करते हुए अधिकारियों के यहाँ चक्कर काटने पर 1958 में बतख मियाँ अन्सारी परिवार का निवास स्थान सिस्वाअजगरी (Siswa Ajagari) गाँव के बजाय उस गाँव से लगभग सौ मील दूर एकवापरसानी (Eksaparsani) गाँव में छेः एकड जमीन को सरकार ने आबंटन किया। बतख मियाँ परिवार जीविका के लिए और कोई चारा न रहने के कारण सरकार के व्दारा प्रदत्त थोडी जमीन में खेती करके जीवन व्यापम करने के लिए 1960 में एकवापरसानी गाँव चला गया । उस जमीन पर भी वन विभाग आपत्ति उठाने से छेः सालों के बाद ही अन्सारी के बेटों को हस्तगत हुई। वह जमीन भी नदी परिसर प्रांत में रहने के कारण खेती योग्य नही थी। तब से बतख मियाँ के वारिस प्रथम राष्ट्रपति आदेशों को पूर्ण रूप से लागू करने की माँग करते हुए राज्य सरकार के अधिनेताओं को अनुरोध करने पर भी उनके प्रति किसी ने ध्यान नही दिया।

बतख मियाँ अन्सारी को डॉ. बाबू राजेन्द्र प्रसाद के व्दारा किया गया भूवितरण राजपत्र अधिसूचना (27-01-1962) जारी हुई। इस अधिसूचना की प्रति अन्सारी के बेटे के पास सुरक्षित है। (हिन्दुस्तानी मुसलमानों का जंग-ए- आजादी में हिस्सा- सय्यद इब्रहीम फिक्री पृष्ठ सख्या 23) स्वयं जिलाधीश को जारी हुएआदोश, उन आदेशों को प्रमाणित करते हुए उच्च अधिकारियों से निकाले गये लेख होने पर भी अन्सारी परिवार को मिलने वाली जमीन पूरी नही मिली। इस रुप में चार दशकों का समय बीत गया।

1990 में प्रथम राष्ट्रपति आदोशो को याद दिलाते हुए बीहार राज्य अल्पसंख्याक वर्ग आयोग ने बतख मियाँ अन्सारी परिवार के प्रति होरहे अन्याय को राज्य सरकार की दृष्टि को लेआया। उस समय फिर एक बार राष्ट्रपति आदेशों को अमल करने. बतख मियाँ अन्सारी परिवार के बारे में बीहार राज्य विधान सभा, विधान परिषद में चर्चा हुई। प्रचार माध्यमों की दृष्टि भी इस मामले की ओर गयी । इसी कारण बतख मियाँ अन्सारी के त्याग, साहस के बारे में जनता को अवगत हुआ। फलतः बतख मियाँ अन्सारी के स्वग्राम में उनकी समाधी बनायी गयी। जिला कार्यालय में बतख मियाँ अन्सारी के नाम पर संग्रहालय का प्रबन्ध भी किया गया।

उसके बाद बतख मियाँ अन्सारी की साहस गाथा को, उनके परिवार के प्रति हुए अन्याय को बताते हुए अशरफ खाद्री (1990) सय्यद इब्रहीम फिक्रि (1999) ने अपनी रचनाओं के व्दारा उल्लेख किया है। सय्यद इब्रहीम फिक्री के व्दारा लिखी गयी पुस्तक हिन्दुस्तानी मुसलमानों का जंग - ए- आजादी में हिस्सा भारत सारकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय शिक्षा विभाग के आर्थिक अनुदान से प्रकाशित हुई। इस ग्रन्थ में राष्ट्रपति के लेख अधिसूचनाओं से संबन्धित विवरण है। लोग, प्रमुख लोग, लेखक जो जितना भी पुकारे सरकार पर कोई असर नही पडा।

बतख मियाँ अन्सारी के परिवार को न्याय नही मिला। आखिर 2004 में बीहार विधान सभा में भी बीहार के लाडले भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. बाबू राजेन्द्र प्रसाद आदेशों के बारे में, उन आदेशों का दशकों से न लागु होने के बारे में बतख मियाँ अन्सारी परिवार के प्रति होते हुए अन्याय पर चर्चाएँ हुई, लेकिन आचरण में तो न्याय नही हुआ। कुछदिनों तक यह मामला जनता में चर्चा का विषय बनकर धीरे धीरे जन समूह के भूल के सागर मे ओझल होगया।

एक दशक के बाद महात्मा के प्राण रक्षक के परिवार की भयानक, दुखद स्थिति (Family of Mahatmas Sauiour in dine Straits) शीर्षक से 22 जनवरी 2010 महात्मा के प्राण रक्षक बतख मियाँ अन्सारी के परिवार की दयनीय स्थिति को जाहिर करते हुए हिन्दुस्तान टैम्स (Hindustan Times) दैनिक समाचार पत्र में लेख प्रकाशित हुआ। इस प्रकाशित समाचार के प्रति तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिल के कार्यालय ने प्रतिक्रिया व्यकत किया। राष्ट्रपति के आफिसर आन स्पेशल ड्यूटी (Officer on Special Duty) अर्चना दत्ता इस मामले में पूर्व, पश्चिम, चंपारन जिलाधीशों को लेख लिखते हुए प्रथम राष्ट्रपति के आदेशों के तुरंत अनुपालन करने के आदेश दिये गये। इन आदेशों के प्राप्ती को लेकर जिलाधीश आखिर मुख्यमंत्री नितीश कुमार जी भी अनुमोदन करते हुए इन आदेशों को तुरंत निपटाने की घोषणा करने पर भी यह घोषणा मात्र घोषणा के रूप मे ही रह गयी।

बतख मियाँ अन्सारी की तीसरी पीढी के वारिश आजतक राष्ट्रपति के आदेश, इन आदेशों को प्रमाणित एवं अनुमोदन करते हुए विविध सरकारी अधिकारियो के व्दारा दिये गये पत्र, एवं मिसिलों को पकडकर अधिकारियो, कार्यालयों, प्रजा प्रतिनि धियो के घरों के पास कई बार चक्कर काटने पर भी समस्या के हल मे कोई प्रगति नही हुई। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. बाबू राजेंन्द्र प्रसाद के आदेश पूर्ण रूप से निपटाना महात्मा गाँधी के प्राण रक्षक साहसी बतख मियाँ अन्सारी परिवार के लिए आखरी आशा के समान है।

* * *

भारतीय आजादी आंदोलन के इतिहास में प्रमुख भूमिका निभाकर जातिपिता नामक खिताब पाकर लोगें से नीराजन पाये महात्मा गाँधी के प्राणों को बचाने वाले बतख मियाँ की घटना इतिहास के पन्नों में समुचित रुप से क्यों स्थान नही पायी? यह तो जवाब रहित प्रश्न सा रह गया है। 1915 में दक्षिणाफ्रिका से स्वदेश आये हुए महात्मा अपने जीवन काल मे बीती हर एक घटना को, उस घटना से जुडे विविध पात्रधारियों के बारे में अपनी पुस्तकों में, लेखो में, पत्रिकाओं में, सविवरण उल्लेख किया गया है। हर एक छोटी घटना के बारे में प्रतिक्रिया व्यकत करनेवाले महात्मा गाँधी जी अपने ऊपर गोरे नील बागान मालिक इर्विन के व्दारा किये गये हत्या की साजिस को तोडकर दारुण दुःखों के शिकार हुए बतख मियाँ अन्सारी के बारे में क्यों उल्लेख नही किया है? यह तो समझ मे नही आनेवाली बात है। केवल बतख मियाँ अन्सारी के बारे मे ही नहीं, चंपारन सत्याग्रह आंदोलन के दौरान जिन्होने अहं भूमिका निभाई है उनमें से शेख गुलाब, पीर मुहम्मद मुनीस, हर भन्स सहाह, शीतल राय जैसे प्रमुख किसान योद्धाओं के बारे में भी अपनी रचनाओं में महात्मा उल्लेख नही करना भी ध्यान देने वाली बात है। दक्षिणाफ्रिका से स्वदेश आये मोहन दास करम चन्द गाँधी ने दक्षिणाफ्रिका के समाचार, उसके बाद भारत आने के बाद यहाँ की घटनाओं का उल्लेख करते हुए (Auto Biography or My Experience with the truth) आत्म कथा शीर्षक से 1925 मे लिखी। यह आत्म कथा दो भागों मे 1927, 1929 में प्रकाशित हुई। 1993 में तेलुगु में अनुदित यह ग्रन्थ ''नीलारंग धब्बा'' '' बीहारियों की नादानी'' ''अंहिंसा देवी साक्षात्कार'' ''केस वापस लेना'' ''कार्यविधान'', ''अनुचर'', ''गाँवो में उजवल पक्ष'' ''श्रामिकों से संबन्ध'' जैसे अलग अलग शीर्षकों से चंपारन अनुभवों को निक्षिप्त किया गया है। इन अनुबन्ध शीर्षकों में किसान नेता राजकुमार शुकला के बारे में गाँधी ने उल्लेख किया है। लेकिन बतख मियाँ अन्सारी. पीर मुहम्मद मूनीस आदि के बारे में उल्लेख नही करना ध्यान देने की बात है।

डॉ. बाबू राजेन्द्र प्रसाद भी चंपारन का इतिहास, चंपारन सत्यागह के बारे में बहुत कुछ लिखने पर भी कहीं भी बतख मियाँ अन्सारी की प्रस्तावना उसमें नही है। महात्मा गाँधी पर किया गया हत्यायत्न को बतख मियाँ के व्दारा विच्छेद करने के प्रत्यक्ष गवाही डॉ. बाबूराजेन्द्र प्रसाद थे। उस कारण से ही 1950 के सार्वजनिक सभा में जन समूह के समक्ष अत्यंत ऐतिहासिक महत्व रखनेवाली बतख मियाँ की घटना का उल्लेख राष्ट्रपति ने किया है। उसके बाद बतख मियाँ अन्सारी परिवार के कुशल - क्षेम के प्रति दिलचस्पी दर्शाये। डॉ प्रसाद ने किस कारण बतख मियाँ अन्सारी के त्याग, और साहस को अपने ग्रन्थ में प्रस्तावित कयों नही किया है यह तो समझ से परे है।

चंपारन किसान आंदोलन में मात्र भागलेना ही नही उस आंदोलन के खास बातों को विविध संदर्भो में अक्षरबद्ध कर प्रताप जैसी पत्रिकाओं के व्दारा जनता तक पहुँचाने वाले पीर मुहम्मद मूनीस ने भी बतख मियाँ अन्सारी की धटना के बारे में नही लीखा है। महात्मा चंपारन सत्याग्रह आंदोलन में लगभग छेः नौ माह बिताये। उस समय चंपारन में घटित सभी घटनाओ को पीर मुहम्मद मूनीस ने प्रताप पत्रिका में प्रकाशित करवाया।

अंग्रेजों के मन माने राज को समाप्ते करवाने के लिए आये हुए माहात्मा गाँधी को विषाहार व्दारा किया गया षडयंत्र, उस षडयंत्र को विच्छेद करने वाले बतख मियाँ अन्सारी, उसके उपरांत नील बागान मालिकों की बर्बरता का शिकार होकर कष्टों को झेले हुए अन्सारी के परिवार के बारे में कयों नही लिखा गया? समाधान हीन, प्रश्न। प्रमुख इतिहासकार के.के दता (1905-1982) पीर मूनीस घर से कुछ कागजात और चंपारन इतिहास शीर्षक से मूनीस के व्दारा लिखकर रखीगयी पुस्तक, और लेखों को लेकर गये। उन्होने उन कागजात, लेखों को, मूनीस की रचनाओं का संकलन करना चाहा। चंपारन इतिहास पुस्तक प्रकाशित करवाना चाहा लेकिन 1934 में आये भूकँप में उनके घर पर जो मूनीस की रचनाएँ थी, पत्र, लेख सभी नष्ट, भ्रष्ट होगये। उस कारण से बतख मियाँ अन्सारी की घटनाओं के बारे में पीर मूनीस ने लिखा है या नहीं इस का तो पता नही। फिर भी चंपारन सत्याग्रह आंदोलन की मुख्य घटनाओं को ही नही हर विषय को प्रताप पत्रिका व्दारा लोगों को अवगत कराने वाले, गाँधी जी के प्राण हरण के लिए किया गया भयंकर षडयंत्र, उस षडयंत्र को बाबू राजेन्द्र प्रसाद के समक्ष में तोडकर महात्मा के प्राणों को बचाये गये अत्यंत महत्व पूर्ण समाचार अंश को या तो अपनी प्रताप पत्रिका मे हो या दुसरी पत्रिका में हो पीर मूनीस ने कयों प्रस्तुत नही किया है यह तो समझ में नही आता।

जो जैसा भी हो भारतीय आजादीआंदोलन के इतिहास में अपना एक अहं अध्याय को बनाया रखनेवाले जातिपिता महात्मा गाँधी के प्राणों को लेने की अंग्रेजो की साजिस से बचाने वाले बतख मियाँ अन्सारी को आजादी आंदोलन के इतिहास में उचित स्थान नही मिलना एक ऐतिहासिक विषाद है। उस दिन की घटना के प्रत्यक्ष साक्षी बनकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति के ओहदा में डा. बाबू राजेन्द्र प्रसाद सार्वजनिक रुप से अन्सारी के साहस एवं त्याग को स्वीकार कर बतख मियाँ परिवार को सहारा देने के सत संकल्प से खेती योग्य जमीन को संक्रमित करने के आदेशों को जनतांत्रिक सरकारी मिशिलों में उपेक्षित पडे रहना, सात दशकों के बाद भी पूर्ण रूप से लागू नही होना अत्यंत खेद जनक बात है।

REFERENCE

BOOKS :

01. Hindustani Musalmano ka Jang-e-Azadi Mein Hissa (Hindi), Syed Ibrahim Fikri, New Delhi, 1999.
02. Muslim Freedom fighters (English), Syed Ubaidur Rahaman, New Delhi, 2017.
03. The Immortals (Album in English and Telugu), Syed Naseer Ahamed, Azad House of Publicatons, Undavalli, Andhrapradesh, 2014.
04. Chirasmaraneeyulu (Telugu), Syed Naseer Ahamed, Azad House of Publicatons, Vinukonda, Andhrapradesh, 2008.
05. Shek Gulab (Hindi), Afroz Alam Shahil, New Delhi, 2017.
06. Dalith Freedom Fighters, (English), Mohan Dass Namisharay, Gyan Publishing House, New Delhi, 2010
07. Mazharul Haque (English), Dr Aeyamuddin Ahmad and Dr Jata Sankar Jha, Publication Division, Govt of India, 1976.
08. The Muslim Elite (English), Ali Ashraf, Atlantic Publishers & Distributors, New Delhi, 1982.
09. Muslims and Freedom Movement In India (English), Kamta Chaubey, Ghugh Publications, Allahabad, 1990.
10. Peer Muhammad Moonis Kalam Sathyagrahi (Hindi), Sreekanth, Prabhat Prakashan, New Delhi, 2017.
11. Sathyasodhana leka Athma Katha (Telugu), Mohandas Karamchand Gandhi, Telugu Tranlation by Vemuri Radhakrishnamurthy, Navajeval Publishing House, Ahamadabad, 1993.
12. Remembering Muslim Makers of Modern Bihar, Compiled & Edited by Dr. Mohammad Sajjad, Brown Book Publications, New Delhi, 2019.
13. An Autobiography, or The Story of My experiments with trugh, MK Gandhi, Navajeval Publishing House, Ahamadabad, 2004.

ARTICLES :

01. Batakh Mian vs Nathuram Godse : How has India forgotten about the man who refused to poison Gandhi? - Ajaz Ashraf
02. On the 100th anniversary of the Champaran Satyagraha, the family of the man who saved Gandhi says the country has forgotten him.- S. Anoop.
03. Family of Mahatma’s saviour in dire straits.-BV Murty, Hindustan Times
04. Batak Mian – forgotten patriot who saved Mahatma’s life in 1917, Manzar Bilal, Two Circles.net., January 30, 2010.
05 The Forgotten Cook Who Paid Heavily For Refusing To Poison Mahatma Gandhim, Sanchari Pal January 30, 2018.
06. Unrewarded saviour and unsung hero, Sandeep Bhaskar, Deccan Herald, Oct 03 2009.
07. Pir Mohammad Munis: An organic intellectual activist of the Champaran Satyagraha, Mohammad Sajjad, Aligarh Muslim University, May 1, 2013.
08. Here's The Story Of Pir Muhammad Munis, A Hindi Journalist And Unsung Hero Of Champaran Satyagraha, Afroz Alam Sahil, Journalist, Delhi.
09. Champaran : Jis Admine Gandhi ki jan Bachaye, desh aur system use bhoolgaya (Hindi), Chandana Srivastav.
10. Mahathma Gandhi ki jaan Bachane vaale Bataq Miya Ansari (Hindi),Jabir Hussain, Patna,Bihar.
11. Champaran Sathyagraha : Retrieving Some Forgotten Heroes, Mohammad Sajjad and Afroz Alam Shahil, History and Sociology of South Asia 12 (1) 1-16, 2007, Jamia Millia Islamia, Sage Publications.

VIDEOS :

01. Batak Mian: Forgotten patriot who saved Bapu's life in 1917 https://www.youtube.com/watch?v=sj9Ajqk9Mp4
02. Mahatma Gandhi Ko Bachaane Waale Shakhm Ko Jaanatain Hain aap? https://www.youtube.com/watch?v=qOCvxWNUqDI
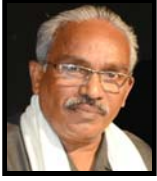
सय्यद नशीर अहम्मद

सय्यद नशीर अहम्मद का जन्म 22 दिसंबर 1955 में नेल्लूर जिला आलूर तहसिल पुरणि गाँव में हुआ। माता-पिता शेक बीबीजान, सय्यद मीरा मोहिद्दीन, किसान परिवार। पढाईः एम. काम, एल. एल,बि, साहित्य रत्न (हिन्दी) डिप्लोमा इन जर्नलिजम, वृतिः वकील। प्रवृतिः पत्रकार, लेखक, इतिहासकार। प्रस्तुत निवासः उंडवल्ली, 522501, ताडेपल्ली, गुंटूर जिला, आँध्रप्रदेश।

बचपन से लिखना शुरु करने पर भी 1975 में 'मरोप्रपँचम' लिखित मास पत्रिका में पहलीबार कविताएँ प्रकाशित। 1976 मे प्रगती सचित्र साप्ताहिक, जयश्री, ज्योति मास पत्रिकाओं में विविध कहानियाँ व्यंग्य चित्र प्रकाशित हुए। तब से विविध पत्रिकाओं में कविताएँ गीथ, कहानियाँ, राजनितिक सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, समीक्षात्मक लेख, निबन्ध व्यंग्य चित्र प्रकाशित। मित्र विएस्सार अवधानी से मिलकर मरो प्रपंचम, भेरी, लिखित मास पत्रिकाएँ चलायी गयी। राज्य के विविध प्रजा समितियाँ, संस्थाएँ संचालित पत्रिकाओ को संपादक के रूप में सेवाएँ की। स्वयं 2006 से 2011 तक इंडिया मास पत्रिका संचलित।

भारतीय आजादी आंदोलन में मुस्लीम जन समुदायों का योगदान का उल्लेख करते हुए 1998 में ग्रन्थ रचना एवं प्रकाशन आरंभ किया गया। तब से 1.भारतीय आजादी आंदोलन मुसलमान 2. भारतीय आजादी आंदोलन - मुसलमान महिलाएँ. 3 भारतीय आजादी आंदोलन आँध्रप्रदेश मुसलमान, 4. शेर ए मैसूर- टीपू सुलतान 5. भारतीय आजादी आंदोलन - मुसलमानों का जन आंदोलन, 6. शहीद-ए- आजम अष्फाखुल्लाखान, 7. भारतीय आजादी आंदोलन - मुसलमान योद्धा- 1, 8. चिरस्मरणीय 9. 1857 मुसलमान, 10. अक्षर शिल्पी, 11. चरितार्थ (तेलुगु) The Immortals (अंग्रेजी) 12. कुवैत खबरे, 13. बिस्मिल-अष्फाक, 14. पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, - अष्फाखुल्लाखान, 15. आजाद हिन्द फैाज - मुसलमान योद्धा 16. महात्मा गाँधी के प्राण रक्षकः बतख मियाँ अन्सारी आदि ग्रन्थों का प्रकाशन। इन ग्रन्थों में से बारह ग्रन्था विविध व्यकित व संस्थाओं से पुनःमुद्रित हए।

भारतीय आजादी आँदोलन - मुसलमान शीर्षक से अंग्रेजी में लिखागया बडा लंबा लेख अलीघर मुस्लिम विश्रवविद्यालम प्रकाशित। भारतीय आजादी- मुसलमानों का योगदान निबन्ध संकलन में स्थान पाया। इन लेखों को विविध राज्यों के विविध संस्थाएँ, समितियाँ, पत्रिकाएँ अपने प्रत्येक स्मृति अंको में स्थान देचुके। उनके ग्रन्थ विविध प्रांतों के पत्रिकाएँ धारावाहिक रुप में प्रकाशित करचुकी हैं और कर रही है।

इन ग्रन्थों में शहीद-ए- आजम अष्फाखुल्ला खान ग्रन्थ उर्दू भाषा में अनुदित हुआ। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल - अष्फाखुल्ला खान ग्रन्थ तेलुगु, अंग्रेजी, उर्दू भाषाओ में 20 हजार प्रतियाँ छपवाकर पूरे भारत में 250 से अधिक प्रांतों में मुफत में वितरण की गयी। तेलुगु-अंग्रेजी भाषाओं में 2014 में प्रकाशित चरितार्य एलबम राष्ट्रीय स्तर पर, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष आदर पाया। यह एलबम, तमिल, हिन्दी, गुजराती मराठी भाषाओ में प्रकाशित होने वाला है।

फिल हाल 1. चरितार्थ-2, 2. चिरस्मरणीय - 2, 3. भारतीय स्वार्तंत्र्य संग्रामः मुसिलम योद्धा - 2, 4. इतिहास बनायी मुस्लिम महिलाएँ, 5. मातृभूमि सेवा मे पुनीत मुस्लिम

लाडले. 6. दक्षिण भारत - कम्यूनिस्ट आंदालन निर्माताः दादा अमीर हैदरखान 7. भारतीय मुस्लिम - स्थितिगतियाँ 8. भारतीय मुस्लिम समाजः कल्पना - यथार्थ आदि ग्रन्थों को प्रकाशित करनेवाले है।

विगत दो दशकों से उनके व्दारा किये गये प्रयासों के परिप्रेक्ष्य में 1. वी.आर-नार्ला विशिष्ट जर्नलिस्ट पुरस्कार (विजयवाडा- 2004) से सम्मानित। 2. तेलुगु- भाषा पुरस्कार (गंटूर 2007) 3. डॉ. बी. आर. अंबेड्कर फेलोसिप पुरस्कार (नईदिल्ली 2008) 4. स्वातंत्र्य समर योद्धा - अष्फाखुल्ला खान स्मारक पुरस्कार (हैदराबाद 2011) 6. कवि कोकिल चिन सुब्बय्या स्मारक पुरस्कार (गुंटूर 2012), 7. संघमित्र पुरस्कार। बुक आफ स्टेट रिकार्ड (हैदराबाद 2013) 8. मास्टर जी फैंडेशन सेवा रत्न पुरस्कार (विश्वकला मंडली हैदारबाद 2015) 9. जीवन साफल्य पुरस्कार (श्रीमति ज्योतिरावबाई पूले एड्युकेशनल चारिटबुल ट्रस्ट विशाखपट्नम 2016) 10. उगादि पुरस्कार (आँध्रप्रदेश सरकार 2016) 11. विशिष्ट सेवा पुरस्कार (नरसरावपेटा कलामंच 2016), 12. जनोपकारी आत्मीय पुरस्कार (जनोपकारी मास पत्रिका कखली 2016) 13. फ्रौड आत्मीय पुरस्कार (हैदराबाद 2016) 14. लोक बंधु सद्भावना सम्मान राष्ट्रीय पुरस्कार (लकनऊ अत्तर प्रदेश 2017) 15. कीर्ति पुरस्कार (श्री पोट्टिश्रीरामुलु तेलगु विश्र्व विदयालय हैदराबाद 2015) 16. महारष्ट्र बुकआफ रिकार्ड्स (कविता सागर पब्लिकेशन जयसिहं पूर महाराष्ट्र 2018) 17. सृजन प्रिया पुरस्कार (सृजनप्रिया मास पत्रिका हैदराबाद 2018) 18. डॉ पट्टाभि प्रतिभा पुरस्कार (डॉ. पट्टाभि कलापीठ विजयवाडा 2018) 19. राज्य स्तर तेलुगु जर्नलिस्ट पुरस्कार (कडपा 2018) 20. माटिरतन पुरस्कार 2018 (अष्फखुल्ला खान स्मारक अमर वीर शोध संस्थान पैजाबाद उत्तरप्रदेश 2018) आदि पुरस्कारों से उन्हे सम्मानित किया गया।

भारत मुस्लिम स्वतंत्र्य समर योद्धाओं का समाचार सबलोगों को प्रदान करने के लक्ष्य से पूरे भारत में विविध संस्थाएँ व्यक्तियों के निमंत्रण पर स्वातंत्र्य समर योद्धाओं के चित्रपट प्रदर्शनों का प्रबन्ध कर रहे हैं। छात्र अपने पुस्तकों पर चिपकालेने के लिए नाम स्टिककर स्वातंत्रय संग्राम में अहं स्थान पाये योद्धाओं के विवरण से छोटी सी पुस्तिकाएँ, चित्र, विविध, संस्थाओं के सहसोग से प्रकाशित कर देश भर मुफ्त में वितरण कीगयी। हमारे पूर्वजो का त्यागमय साहसपूर्ण इतिहास को, जनता को, खासकर बाल - बालिकाओं को युवकों को अवगत कराने के लिए आचरणात्मक कार्य क्रम के व्दारा विगत 20 सालों से प्रयास कर रहे हैं। उन्होने पीडी. एफ फैल्स को जो चाहते है उन्हें मुफत में प्रदान कर रहे है। अंतर्जाल में वेबसैट तैयार कर पुस्तकों को मुफ्त में प्रदान कर रहे हैं। अंतर्जाल मे दो वेबसैट तैयार कर पुस्तकों को मुफ्त में डैनलोड करलेने की व्यवस्था बनायी गयी है।

सय्यद नशीर अहम्मद लेखक, अभिनेता, चित्रकार, व्यंग्य लित्रकार, वक्ता, संपादक, पत्रकार, वकील, इतिहासकार, सामाजिक सेवक, के रुप में विविध क्षेत्रो में सेवाएँ कर रहे हैं। उन्होने, अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रांतीय, स्तर बैठकों में संगेष्ठियों में भाग लिया हैं। आर्थिक सामाजिक, असमानताएँ रहित साम्यवादी प्रजातांत्रिक व्यवस्था के निर्माण में लेखक के रुप में भागीदार बनना, ज्ञान के लोकतांत्रिकीकरण की आकांक्षा रखते हुए अविराम अपने लेखन कार्य को आगे बढा रहे हैं।

- आजाद हौव्स आंफ पब्लिकेशन